जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – मार्च 2026 ।। अंक – 68 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

बुरे वक्त में दिखाई हिम्मत, कठिन संघर्ष से पाई सफलता (पृष्ठ – 02)

नाश्ता दुकान से आत्मनिर्भरता की मिसाल बनीं जूली देवी (पृष्ठ – 03)

कविता देवी की मेहनत: आंगनबाड़ी बच्चों के लिए पोशाक तैयार करने में निभा रहीं अहम भूमिका (पृष्ठ – 04)

जीविका दीदी का सिलाई घर: ग्रामीण महिलाओं के लिए आत्मनिर्भरता और सम्मानजनक जीविकोपार्जन का सशक्त माध्यम

जीविका द्वारा ग्रामीण विकास और महिला सशक्तीकरण की दिशा में कई महत्वपूर्ण प्रयास किये जा रहे हैं। इन्हीं प्रयासों के बीच जीविका द्वारा संचालित "जीविका दीदी का सिलाई घर" एक प्रभावी और परिवर्तनकारी पहल के रूप में उभरा है। यह केवल सिलाई का प्रशिक्षण देने वाला केंद्र नहीं है, बल्कि ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने, उन्हें सम्मानजनक रोजगार से जोड़ने और उनकी क्षमता को सशक्त करने का एक संगठित प्रयास है। बिहार जैसे राज्य में, जहाँ लंबे समय तक महिलाओं की श्रम भागीदारी सीमित रही है और रोजगार के अवसर अधिकांश तौर पर असंगठित और अस्थायी रहे हैं, वहाँ यह पहल महिलाओं के लिए नए अवसर के द्वार खोल रही है। सिलाई के माध्यम से महिलाओं का न केवल कौशल विकास हो रहा है, बल्कि उनके लिए आय का स्थायी स्रोत भी सृजित हो रहा है।

ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ पारंपरिक रूप से सिलाई, कढ़ाई या अन्य हस्तकला से जुड़ी गतिविधियाँ करती रही हैं, लेकिन इन कार्यों को अक्सर घरेलू दायरे तक ही सीमित माना जाता था। इसके कारण उनकी मेहनत को आर्थिक पहचान नहीं मिल पाती थी। विपणन के समुचित व्यवस्था न होने के कारण उन्हें बिचौलियों पर निर्भर रहना पड़ता था, जिससे उनके श्रम का उचित मूल्य नहीं मिल पाता था। जीविका ने इस स्थिति को बदलने का प्रयास किया है। इस पहल के माध्यम से महिलाओं को व्यवस्थित प्रशिक्षण दिया जाता है, उन्हें स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से संगठित किया जाता है और बड़े पैमाने पर उत्पादन कार्य से जोड़ा जाता है। साथ ही, उनके उत्पादों के लिए संस्थागत मांग सुनिश्चित की जाती है, जिससे उन्हें नियमित और भरोसेमंद आय का अवसर मिल रहा है।

सिलाई केंद्र में सिलाई का प्रशिक्षण और वस्त्रों का उत्पादन दोनों प्रकार के कार्य किये जाते हैं। यहाँ महिलाओं को सिलाई मशीन चलाने, कपड़े की कटाई, नाप लेने, गुणवत्ता नियंत्रण और छोटे स्तर के उद्यम प्रबंधन जैसे कौशल सिखाए जाते हैं। राष्ट्रीय कौशल विकास निगम के सहयोग से औपचारिक कौशल प्रमाणन की भी व्यवस्था की जा रही है। इससे ग्रामीण महिलाओं को मान्यता प्राप्त प्रमाणपत्र मिलेगा, जिससे उनके लिए रोजगार के नए अवसर खुलेंगे और उनका आत्मविश्वास भी बढ़ेगा। इस दिशा में समाज कल्याण विभाग के अंतर्गत संचालित समेकित बाल विकास योजना और बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, जीविका के बीच जुलाई 2025 में एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुआ। इस समझौते के तहत जीविका स्वयं सहायता समूहों की महिलाएँ आंगनबाड़ी केंद्रों में नामांकित 3 से 6 वर्ष के बच्चों के लिए पोशाक तैयार कर उपलब्ध करा रही हैं। यह पहल दो महत्वपूर्ण उद्देश्यों को पूरा कर रही हैं, पहला, आंगनबाड़ी केंद्रों में बच्चों को समय पर पोशाक उपलब्ध कराना और दूसरा, ग्रामीण महिलाओं के लिए बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर पैदा करना। इस कार्यक्रम के माध्यम से राज्य के लगभग 50 लाख बच्चों तक पोशाक पहुँचाने का लक्ष्य रखा गया है। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु समूह से जुड़ी लगभग एक लाख से अधिक महिलाओ को राज्य के करीब 1050 सिलाई केंद्रों के माध्यम से जोड़ा गया है। इनमें से 45 हजार से अधिक महिलाओं को सिलाई का प्रशिक्षण दिया गया है। इन प्रशिक्षित जीविका दीदियों के द्वारा पोशाक सिलाई का कार्य किया जा रहा है। कार्यक्रम के संचालन को अधिक पारदर्शी और प्रभावी बनाने के लिए डिजिटल तकनीक का भी उपयोग किया जा रहा है। सदस्य पंजीकरण एप्लीकेशन और "दीदी का सिलाई घर" ईआरपी प्रणाली के माध्यम से उत्पादन, गुणवत्ता, भुगतान और वितरण की निगरानी की जाती है। इससे काम की पारदर्शिता बढ़ती है और यह सुनिश्चित होता है कि कार्य समय पर और सही तरीके से पूरा हो।

यह पहल केवल आंगनबाड़ी पोशाक तैयार करने तक सीमित नहीं है। जीविका दीदी का सिलाई घर विभिन्न प्रकार के उत्पाद भी तैयार करता है, जैसे सलवार–सूट, शर्ट–पैंट, तकिए के कवर, बैग, कुर्सी कवर और राष्ट्रीय ध्वज आदि। इस विविध उत्पादन प्रणाली के कारण महिलाओं को अलग–अलग प्रकार के कौशल सीखने का अवसर मिलता है। इससे उनके रोजगार के अवसर बढ़े हैं और वह स्थानीय बाजार के साथ–साथ अन्य संस्थागत मांगों को भी पूरा कर रही हैं।

इस कार्यक्रम का सबसे बड़ा प्रभाव महिलाओं के जीवन में सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन के रूप में दिखाई देता है। जब महिलाएँ अपनी मेहनत से आय अर्जित करती हैं, तो परिवार और समाज में उनका सम्मान बढ़ता है। वह परिवार के निर्णयों में अधिक सक्रिय भूमिका निभाती हैं और अपने बच्चों की शिक्षा तथा स्वास्थ्य पर बेहतर ध्यान दे पाती हैं। इस प्रकार जीविका द्वारा संचालित 'सिलाई गतिविधि' न केवल महिलाओं के लिए रोजगार सृजित करने वाला एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है बल्कि यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने और महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में भी एक प्रभावी कदम है।

सरिता दीदी के सपनों को मिला पंख

औरंगाबाद जिले के रामपुर गाँव की रहने वाली सरिता देवी आज आत्मनिर्भरता की मिसाल बन चुकी हैं। किरण जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी सरिता देवी, पुष्पांजली जीविका महिला ग्राम संगठन तथा जागृति जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ की भी सक्रिय सदस्य हैं। कभी घर की सीमित आय में परिवार चलाना उनके लिए बड़ी चुनौती थी, लेकिन आज वह अपने श्रम और संकल्प से परिवार की मजबूत आर्थिक आधार बन गई हैं।

बिहार सरकार की मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना ने उनके जीवन में निर्णायक मोड़ लाया। लंबे समय से वह अपना कोई स्वरोजगार शुरू करना चाहती थीं, परंतु संसाधनों की कमी आड़े आती रही। योजना के तहत मिली दस हजार रुपये की सहायता राशि ने उनके लिए नए अवसरों के द्वार खोल दिए। उन्होंने इस राशि का उपयोग चूड़ी निर्माण का काम शुरू करने में किया। शुरुआत में यह कार्य उनके लिए नया था, लेकिन सीखने की लगन और मेहनत ने जल्द ही उन्हें दक्ष बना दिया। वह आकर्षक, रंग–बिरंगी और टिकाऊ चूड़ियाँ बनाने लगीं, जिनकी स्थानीय हाट–बाजार में अच्छी मांग होने लगी। बहुत की जल्द उनकी पहचान एक कुशल उद्यमी के रूप में स्थापित हो गई है। आज वह अपने इस व्यवसाय से प्रतिमाह आठ से दस हजार रुपये तक की आमदनी अर्जित करने लगी है। यह आय न केवल उनके परिवार की जरूरतों को पूरा कर रही है, बल्कि उन्हें आत्मसम्मान और आत्मविश्वास भी दे रही है। सरिता देवी मानती हैं कि योजना से मिली सहायता ने उन्हें नए सपने देखने और उन्हें साकार करने का साहस दिया। अब वह अपने व्यवसाय का विस्तार करने और अन्य महिलाओं को भी प्रेरित करने का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ रही हैं।

बुरे वक्त में दिखाई हिम्मत, कठिन संघर्ष से पाई सफलता

भोजपुर जिले के बड़हरा प्रखंड अंतर्गत सरैया पंचायत की निवासी अनीता कुंवर आज सफल व्यवसायी बन चुकी हैं। अंशु जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी अनीता, भूमि ग्राम संगठन तथा श्री राम संकुल स्तरीय संघ की सक्रिय सदस्य हैं। उनका जीवन संघर्षों और चुनौतियों से भरा रहा, लेकिन अपने दृढ़ निश्चय और मेहनत के बल पर उन्होंने कठिन परिस्थितियों को पीछे छोड़ते हुए अपने जीवन को नई दिशा दी।

करीब बारह वर्ष पहले गंभीर बीमारी के कारण उनके पति भीम कुमार गुप्ता का निधन हो गया था। इस घटना ने अनीता के जीवन को पूरी तरह झकझोर दिया था। दो छोटे–छोटे बच्चों की जिम्मेदारी उनके कंधों पर आ गई थी। परिवार की आय का साधन समाप्त हो जाने से बच्चों सहित पूरे परिवार के भरण–पोषण की चिंता उन्हें लगातार परेशान करने लगी थी। ऐसे कठिन समय में उन्होंने हिम्मत से नहीं हारी और अपने पति द्वारा चलाए जा रहे लिट्टी–समोसा की छोटी सी दुकान को खुद संभालने का निर्णय लिया। शुरुआत में यह काम उनके लिए चुनौतीपूर्ण था, लेकिन धीरे–धीरे उन्होंने मेहनत और लगन से इस व्यवसाय को आगे बढ़ाना शुरू किया।

इसी दौरान उन्हें बिहार सरकार की मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के तहत दस हजार रुपये की सहायता राशि प्राप्त हुई। इस आर्थिक सहयोग ने उनके दूध के व्यवसाय को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने इस राशि का उपयोग अपनी दुकान में मिठाई का काउंटर बनवाने में किया, जिससे उनकी आमदनी में वृद्धि हुई। काउंटर में स्वच्छता पूर्वक सामान रखने के कारण उनके समोसा और मिठाई दोनों की अच्छी बिक्री होने लगी है। अनीता कुंवर अब आत्मविश्वास से भरी हुई हैं और अपने परिवार का बेहतर तरीके से पालन–पोषण कर रही हैं। भविष्य में वह अपने इस छोटे व्यवसाय को एक छोटे होटल में बदलने की योजना बना रही हैं। अनीता की यह यात्रा संघर्ष से सफलता तक की प्रेरणादायक कहानी है।

नाश्ता दुकान से आत्मनिर्भरता की मिसाल बनीं जूली देवी

अररिया जिले के सिकटी प्रखंड अंतर्गत बोकन्तरी पंचायत के बोकन्तरी गांव की निवासी जूली देवी रचना जीविका स्वयं सहायता समूह की सक्रिय सदस्य हैं। मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के तहत मिली सहायता ने उनके जीवन में एक सकारात्मक बदलाव लाया और उन्हें आत्मनिर्भर बनने का अवसर प्रदान किया।

पहले जूली देवी और उनके पति ललित कुमार गोस्वामी मजदूरी करके किसी तरह अपने परिवार का भरण–पोषण करते थे। दोनों पति–पत्नी दूसरों के खेतों में काम करते थे, लेकिन इससे बहुत कम आमदनी हो पाती थी। सीमित आय के कारण परिवार की जरूरतों को पूरा करना उनके लिए काफी कठिन हो जाता था। वर्ष 2025 में जूली देवी जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं और समूह की बैठकों में भाग लेने लगीं। इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के बारे में जानकारी मिली। योजना के अंतर्गत उन्हें दस हजार रुपये की सहायता राशि प्राप्त हुई, जिसने उनके जीवन में नई उम्मीद जगाई।

इस सहायता राशि का उपयोग करते हुए जूली देवी ने गाँव के पास स्थित स्थानीय बाजार में नाश्ते की छोटी दुकान शुरू की। वह शाम के समय पकौड़ी, आलू चाप, भूंजा और चाय बेचती है। इस काम में उनके पति भी पूरा सहयोग करते हैं, जिससे व्यवसाय को संभालना आसान हो जाता है। दोनों ने मिलकर मेहनत और लगन से इस कार्य को आगे बढ़ाया, जिसका सकारात्मक परिणाम जल्द ही देखने को मिला। धीरे–धीरे उनकी दुकान पर ग्राहकों की संख्या बढ़ने लगी है और उनकी बिक्री में भी लगातार वृद्धि होने लगी है।

जूली देवी आज इस व्यवसाय से प्रतिमाह बारह से पंद्रह हजार रूपये की आमदनी अर्जित कर रही हैं। इसी आय से वह अपने परिवार का भरण–पोषण कर रही हैं। उनका मानना है कि यह काम मजदूरी से कहीं बेहतर है। अब वह अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने का सपना देख रही है ताकि भविष्य में उनकी आमदनी और बढ़ सके।

संघर्ष से खुशहाली तक की प्रेरक कहानी

अरवल जिले के कुर्था प्रखंड अंतर्गत सैदपुर पंचायत की निवासी सोनी देवी आज आत्मनिर्भर महिला के रूप में अपनी पहचान बना ली हैं। गायत्री जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य सोनी देवी, सपना ग्राम संगठन तथा विकास संकुल स्तरीय संघ से जुड़ी हुई हैं। कभी आर्थिक तंगी और सामाजिक कठिनाइयों से जूझने वाली सोनी देवी का जीवन आज पूरी तरह बदल चुका है। जीविका से जुड़ने के बाद उनके जीवन में जो सकारात्मक परिवर्तन आया, उसने न केवल उन्हें आत्मनिर्भर बनाया बल्कि उनके पूरे परिवार के भविष्य को भी नई दिशा दी है।

सोनी देवी पहले घर से बाहर नहीं निकलती थीं और परिवार की आर्थिक स्थिति भी बहुत कमजोर थी। उनके पति भी उस समय बेरोजगार थे, जिसके कारण घर चलाना काफी कठिन हो गया था। इसी दौरान गांव में जीविका के माध्यम से स्वयं सहायता समूह का गठन हुआ और सोनी देवी गायत्री जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ गईं। समूह से जुड़ने के बाद उन्होंने नियमित रूप से बैठकों में भाग लेना शुरू किया और छोटी–छोटी बचत करने लगीं। धीरे–धीरे समूह से जुड़ाव ने उनके अंदर आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता का विकास किया।

समूह में उनकी सक्रियता और योग्यता को देखते हुए उन्हें जीविका मित्र के रूप में कार्य की जिम्मेदारी दी गई। इस भूमिका से उन्होंने समाज में एक नई पहचान बनाई। वहीं परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए उन्होंने समूह से पचास हजार रूपये का ऋण लेकर एक गाय खरीदी और दूध, दही तथा पनीर बेचने का काम शुरू किया। इस छोटे व्यवसाय से उनकी आमदनी बढ़ने लगी और धीरे–धीरे परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार आने लगा। आज सोनी देवी अपने परिवार के साथ सम्मानपूर्वक जीवन जी रही हैं। उन्होंने अपना घर भी बना लिया है और अपनी दोनों बेटियों को अच्छी शिक्षा भी दिला रही हैं। वह कहती हैं कि जीविका उनके जीवन में नई उम्मीद लेकर आया। आज वह न केवल अपने परिवार का सहारा बनी हैं, बल्कि गाँव की अन्य महिलाओं के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बन गई हैं।

कविता देवी की मेहनत: आंगनबाड़ी बच्चों के लिए पोशाक तैयार करने में निभा रहीं अहम भूमिका

जमुई जिले के जमुई सदर प्रखंड अंतर्गत अगहरा पंचायत के अगहरा गांव की निवासी कविता देवी आज उद्यमी के रूप में अपनी पहचान बना चुकी हैं। गुलाब जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य कविता देवी, ओम ग्राम संगठन तथा स्वाभिमान संकुल स्तरीय संघ से जुड़ी हुई हैं। कविता देवी आज न केवल अपने परिवार की जिम्मेदारियों को सफलतापूर्वक निभा रही हैं, बल्कि अपने कार्य से अन्य महिलाओं को भी प्रेरित कर रही हैं। जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद उनके जीवन में एक नया परिवर्तन आया है, जिसने उन्हें आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाया है।

वर्ष 2014 में उनका विवाह हुआ और आज उनके परिवार में दो बच्चे हैं, 10 वर्ष की एक बेटी और दूसरा, 8 वर्ष का बेटा। बच्चों की परवरिश और घरेलू जिम्मेदारियों के कारण लंबे समय तक वह किसी नियमित रोजगार से नहीं जुड़ पाईं। हालांकि उनके मन में हमेशा आत्मनिर्भर बनने की इच्छा थी। कविता देवी ने वर्ष 2018 में राजनीति शास्त्र विषय से स्नातक की पढ़ाई पूरी की। इसी बीच, जब वह जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं, तो उनके जीवन में एक नया मोड़ आया। समूह से जुड़ने के बाद उन्होंने नियमित बचत करना शुरू किया और उन्हें विभिन्न जीविकोपार्जन गतिविधियों के बारे में जानकारी भी मिलने लगी। इससे उनके भीतर आत्मविश्वास बढ़ा और उन्होंने आगे बढ़कर काम करने का निर्णय लिया।

जुलाई 2025 से कविता देवी स्वाभिमान जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ द्वारा संचालित "जीविका दीदी का सिलाई घर" में सुपरवाइज़र के पद पर कार्यरत है। यहां वह न केवल खुद सिलाई का काम करती हैं, बल्कि अन्य महिलाओं को भी प्रशिक्षण और मार्गदर्शन देती हैं। वर्तमान समय में इस सिलाई केंद्र में आंगनबाड़ी केंद्रों के बच्चों के लिए पोशाक तैयार करने का कार्य चल रहा है। कविता देवी अपने कुशल नेतृत्व और मार्गदर्शन में इस काम को समय पर पूरा करने के लिए पूरी लगन और जिम्मेदारी के साथ कार्य कर रही हैं। उनके अनुसार इस केंद्र में प्रतिदिन लगभग 25 से 30 महिलाएँ सिलाई कार्य के लिए आती हैं और सभी मिलकर निर्धारित लक्ष्य को पूरा करने में जुटी हुई हैं। उन्हें मार्च 2026 तक 40 हजार पोशाक तैयार करने का लक्ष्य दिया गया है, जिसे वह सभी दीदियों के सहयोग से पूरा करने के लिए निरंतर प्रयास कर रही हैं।

इस सिलाई केंद्र से कविता देवी को प्रतिमाह 20 हजार रूपये से अधिक की आमदनी हो रही है। इस आय से वह अपने परिवार की जरूरतों को पूरा कर पा रही हैं और अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा भी दिला रही हैं। उन्हें मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के अंतर्गत 9 अक्टूबर 2025 को 10 हजार रूपये की सहायता राशि भी प्राप्त हुई। इस राशि का उपयोग उन्होंने अपने सिलाई कार्य को आगे बढ़ाने के लिए सिलाई मशीन खरीदने में किया। अब वह सिलाई केंद्र के अलावा अपने घर पर भी सिलाई का काम करती हैं, जिससे उन्हें अतिरिक्त आमदनी हो रही है।

कविता देवी आज अपने गाँव की महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बन चुकी हैं। वह मानती हैं कि यदि महिलाओं को सही मार्गदर्शन, प्रशिक्षण और सरकारी योजनाओं का सहयोग मिले, तो वह आसानी से आत्मनिर्भर बन सकती हैं। कविता देवी अन्य महिलाओं को भी जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ने और स्वरोजगार अपनाने के लिए प्रेरित करती हैं। उनकी मेहनत, लगन और नेतृत्व क्षमता ने यह साबित कर दिया है कि अगर अवसर और समर्थन मिले तो ग्रामीण महिलाएं भी समाज और परिवार की आर्थिक प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

- संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार